वसन्त-ऋतु

संसार में भारत ही ऐसा देश है, जहाँ छः ऋतुएँ बारी-बारी से आती हैं | उन ऋतुओं के नाम हैं- शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म और वर्षा |

वसन्त-ऋतु शिशिर अर्थात् घोर सर्दी के बाद आती है | वसन्त ऋतु सबसे सुहानो होती है | इसीलिए वसन्त को ऋतुराज कहते हैं |

वसन्त के आते ही सर्दी बिलकुल कम हो जाती है | गर्मी अभी आई नहीं होती, इसलिए वसन्त को मीठा मौसम या बहार भी कहते हैं | इसमें न सर्दी सताती है न गर्मी | यह ऋतु फाल्गुन और चैत मासों में होती है |

वसन्त में प्रकृती की शोभा बहुत सुन्दर होती है | बागों में फूल खिल जाते हैं, तालाबों में कमल | वनों में नाना प्रकार के, कई रंगों के फूल मुस्कराने लगते हैं | उन पर भँवरे गूँजने लगते हैं | रंग-बिरंगी तितलियाँ फूल-फूल पर मँडराने लगती हैं | इस ऋतु में आमों पर बौर आने लगता है | आम की डाली पर कोयल कूकने लगती है | नींबू सन्तरे और माल्टे के सफेद फूलों की सुगन्ध दूर-दूर तक फैल जाती है | अमलतास के पेड़ पर पीले फूलों के गुच्छे झूलने लगते हैं | खेतों में सरसों के फूलों की पिली चादर-सी बिछी दिखाई देने लगती है |

वसन्त-ऋतु में सर्दी जैसी ठिठुरन और गर्मी जैसी लू नहीं होती | शीतल, मन्द, सुगन्ध पवन सुखदाई लगाती है | इस ऋतु में मनुष्य, पशु, पक्षी-सभी स्वस्थ तथा प्रसन्न दिखाई देते हैं |

वसन्त पंचमी का त्यौहार इसी मौसम में आता है | इस दिन मन्दिरों, बागों और वनों में जगह-जगह मेला लगता है | लोग झुला झूलते, मिठाइयाँ खाते और नाचते-गाते आनन्द मना ते हैं | बच्चे इस दिन खूब खिलौने खरीदते और पतंगें उड़ाते हैं |

बच्चे बूढ़े, जवान, स्त्री और पुरुष वसन्त-ऋतु में प्रसन्न होते हैं | इसलिए इसे ऋतुराज कहना ठीक ही है |

1- Metindeki cümlelerin yapısı incelenerek, çevirisi yapılacaktır.